



2017

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का क्रमांक
उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक 2321205		
अंकों में	परीक्षार्थी का रोल नम्बर	
2 7 2 1 3 3 8 9 4		
शब्दों में		

नीचे दिये गये उदाहरण के अनुसार रोल नम्बर भरें

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में शब्दों में

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक

ग - परीक्षा का दिनांक

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा **केन्द्र क्रमांक-212027**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर *B. S. Prasad* केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर *[Signature]*

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होतो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा *[Signature]* परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा *Dr. रमा कुशावाह 9840600*

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक	शब्दों में	अंकों में
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				
16				
17				
18				
19				
20				
21				
22				
23				
24				
25				
26				
27				
28				
कुल प्राप्तांक शब्दों में			कुल प्राप्तांक अंकों में	

3

le/mat

+

3

=

✓

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (3) के उ०

(अ) भ्रम हमारे सामने साध्य व असाध्य रूपों में सामने आता है।

(ब) विश्वास में विष धोलने का काम धनानंद जी की प्रेयसी सुजान ने किया था।

(स):- देश-सेवा कविता पर लेखक रामकुमार बख्त वर्मा को 51 रु. का पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

(द):- मालवी बौली प्रमुख रूप से मध्य प्रदेश के इन्दौर, खलाम व देवास जिलों में बोली जाती है।

(इ):- विशेषोक्ति अलंकार।

प्रश्न क्रमांक (4) का उ०

(क)

(ख)

(अ) मंगल वर्मा :- भवानी प्रसाद मिश्र।

(ब) तुम यहाँ आओ :- आश्रवाचक।

(ग) पंचवटी :- खंडरकाव्य।

(द) रंगोली :- शिवप्रसाद सिंह।

(इ) छोटे-छोटे मुख :- रामदरश मिश्र।

P.T.O. continue

4

$$\boxed{\text{पूर्व पष्ठ}} + \boxed{4 \text{ के अंक}} = \boxed{8 \text{ कुल अंक}}$$



प्रश्न क्रमोंक (5) का उ०

(अ) :- सत्य ✓

(ब) :- सत्य ✓

(स) :- असत्य ✓

(द) :- असत्य ✓

(इ) :- सत्य ✓

प्रश्न क्रमोंक (6) का उ०

(अथवा)

कबीरदास जी ने शब्द की महिमा बताते हुए कहा है, कि शब्द तो निराकार होते हैं, अर्थात् शब्द के हाथ-पैर नहीं होते हैं। कबीरदास जी कहते हैं किसी के सम्म प्रति बोले गये शब्द (मीठे शब्द) जहाँ औषधि का कार्य करते हैं, तो वहीं दूसरी ओर कड़वे शब्द बड़े-बड़े घाव दे जाते हैं, अतः हमें अपने मुख से शब्द सम्भालकर बोलना चाहिए।

प्रश्न क्रमोंक (7) का उ०

धरती और ब्रह्मन्त का आपस में जैसा ही नाता है, जिस प्रकार मानव और मानवता का आपस में संबंध होता है।

5

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

दश क अंक 3 अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (8) का उ०

(अथवा)

कवि वीरेन्द्र मिश्र ने भारतमाता की जय-जयकार का आह्वान भारतीय सप्तों, देशज मित्रों, श्रमकर्ताओं, रचनाकारों तथा ग्रह-नक्षत्रों (आम जनता) से किया है।

प्रश्न क्रमांक (9) का उ०

(अथवा)

विभावरी के बीतने जूषा नागरी आकाश कपी पनघट में तारों रूपी धड़ों को डुबा रही है, अर्थात् सूर्य अस्त प्राय है, और आकाश में तारे धीरे-धीरे विलीन हो रहे हैं।

प्रश्न क्रमांक (11) का उ०

राजाधर बाबू ने रेलवे की नौकरी के पैंतीस वर्ष अकेले रहकर ही व्यतीत किये थे, अतः रिटायर होकर घर जाने की खुशी उन्हें थी किंतु रेलवे के जिस क्वार्टर में उन्होंने 35 वर्ष बिताये थे, वहाँ के चिर-परिचित स्नेह-आनंदमय सहज संसार से उनका ~~नाता टूटने~~ तथा क्वार्टर से सामान छट जाने से क्वार्टर की कुरूपता को देखकर उनका मन एक प्रकार के विषाद (दुख) का अनुभव कर रहा था।

प्रश्न क्रमांक (12) का उ०

अदृश्य को गम्भीर किस्म का प्राणी कहा गया है, क्योंकि उसमें यह भ्रम बनाये रखने की शक्ति होती है कि वह गम्भीर व मनहूस किस्म का प्राणी है। इसीलिए अदृश्य को गम्भीर किस्म का प्राणी कहा गया है।

P.T.O.

continue

B
S
E

MADHYA PRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION, BHOPAL

6

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ १० ० के अंक कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (13) का उ.

जिस समय पांडव अज्ञातवास पर थे उस समय कौरवों ने उत्तर कुमार की गायों का हरण करने का प्रयास किया तब अर्जुन ने उत्तर कुमार का सारथी बनकर अकेले ही भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य व सूर्यपुत्र कर्ण के दौत खड़े कर दिये थे।

प्रश्न क्रमांक (14) का उ.

देवकी की मोह में एक छोटा-सा श्याम वर्ण बाल बालक अर्थात् बालक कृष्ण मचल रहे थे।

प्रश्न क्रमांक (16) का उ.

माधुर्य गुण:- जब किसी काव्य के पढ़ने या सुनने से आत्मा क्रूर द्रवित हो जाये, मन खिल उठे तथा कानों में मधु धुल जाये तो वह माधुर्य गुण सम्पन्न रचना होती है।

7

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

भाग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 7 के अंक = कुल अंक



CDNDARY EDUCATION MADHYAPRADESH HOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH HOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH HOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH HOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH HOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (17) का उ०

उत्तराखण्ड के चारों धाम निम्न चार पवित्र नदियों के किनारे बसे हैं :-

- | धाम का नाम | नदी का नाम |
|---------------|--------------------------|
| (1) यमुनोत्री | यमुना नदी के किनारे । |
| (2) गंगोत्री | गंगा नदी के किनारे । |
| (3) केदारनाथ | मंदाकिनी नदी के किनारे । |
| (4) बद्रीनाथ | अलकनन्दा नदी के किनारे । |

प्रश्न क्रमांक (18) का उ०

अथवा

विभावना अलंकार :-

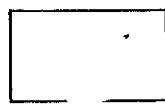
11) परिभाषा :- जहाँ पर कारा के अभाव में भी कार्य पूर्ण हो जाये वहाँ पर विभावना अलंकार होता है।

12) उदाहरण :-

बिनु पद चलें, सुनै बिनु काना,
कर बिनु करै करम विधि नाना ।
आनन रहित, सकल रस भोगी,
बिनु वाणी वक्ता बह जोगी ॥

P. T. O. Continue -

8



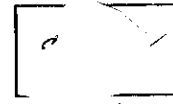
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 8 क अंक

=



उत्तर अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (20) का उत्तर

(अथवा)

प्रगतिवाद की 4 विशेषताएँ निम्न हैं:-

(1) शोषकों के प्रति विद्रोह एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति के भाव:- दस

काल के कवियों ने किसानों, गरीबों आदि पर पूँजीपतियों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों के प्रति विद्रोह के भाव प्रगट किये हैं, तथा शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति के भाव के प्रति व्यक्त किये थे।

(2) आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल:- प्रगतिवादी कवियों ने आर्थिक व

सामाजिक समानता पर बल देते हुए, समाज में व्याप्त उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के अंतर को समाप्त करने पर बल दिया गया है।

(3) सामाजिक यथार्थ का चित्रण:- प्रगतिवादी कवियों ने व्यक्तिगत सुख-दुख के भावों की अपेक्षा समाज में व्याप्त गरीबी, अकाल, भुखमरी, बेरोजगारी आदि सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति पर बल दिया है।

(4) प्रतीकों का प्रयोग:- दस काल के कवियों ने अपने भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति हेतु प्रतीकों का प्रयोग किया है।

(5) ईश्वर के प्रति अनास्था:- प्रगतिवादी कवियों ने ईश्वर के प्रति अनास्था के भाव व्यक्त किये हैं, वे ईश्वरीय शक्ति की तुलना में मानवीय शक्ति को ज्यादा महत्व देते हैं।

9

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

यो. पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ नं. अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (24) का उ.

कहानी व उपन्यास में प्रमुख अंतर निम्न हैं :-

क्र.	कहानी	उपन्यास
11)	कहानी में जीवन की किसी एक घटना का वर्णन होता है।	1) उपन्यास में जीवन के वृद्ध रूप को दर्शाया जाता है।
12)	कहानी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है।	2) उपन्यास में पात्रों की भरमार होती है।
13)	इसका आकार लघु होता है।	3) इसका आकार वृद्ध (विस्तृत) होता है।
14)	कहानी कम समय में सघन प्रभावी होती है।	4) उपन्यास का प्रत्येक मोड़ सघन प्रभावी नहीं होता है।
15)	उदा. - पंच परमेश्वर।	उदा. - कर्मभूमि।

प्रश्न क्र. (9) का उ.

मीरा को हरि से मिलने में अनेक कठनाइयों का सामना करना पड़ता है। मीरा के प्रभु श्रीकृष्ण के महल की ओर जाने वाले चारों रास्ते बंद हैं; उनके महल को जाने वाला रास्ता अत्यंत दुर्गम व कठिनाइयों से परिपूर्ण है। चूंकि मीरा के प्रभु महाराज हैं, अतः उनकी रक्षा के लिए जगह-जगह पहेदाएँ लगे हुए हैं, जो बीच में ही मीरा का रास्ता रोक लेते हैं। जगह-जगह जेठों तथा लुटेरों का भय है, अतः मीरा को अपने प्रभु से मिलने में अनेक कठनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

P.T.O.

11

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

उत्तर जग



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमिक (22) की 3.

तुलसीदास जी

- (1) रचनाएँ:-
- कवितावली
 - दोहावली
 - रामचरितमानस
 - विनय-पत्रिका

भावपक्ष:-

(अ) भक्तिभाव:- तुलसीदास जी भूतवान राम के अनन्य भक्त थे, तुलसीदास जी ने अपने काव्य में अनेक रचनाओं का सृजन अपने दृष्ट भगवान राम को आधार मानकर किया है। आपकी भक्ति भगवान राम के प्रति सेव्य-सेवकभाव की है।

(ब) समन्वयवादी दृष्टिकोण:- तुलसीदास जी समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाने वाले कवि थे, रामभक्त होते हुए अपने अन्य देवी-देवताओं की भी वंदना की है।

(स) लोकहित:- तुलसीदास जी की भक्ति लोकमंगल की भावना से प्रेरित है।

(द) रस योजना:- तुलसीदास जी रस सिद्ध कवि थे। आपने अपने काव्य में शोभ, लीर तथा अंगार रसों को मुक्त हृदय से अपनाया है।

कलापक्ष:-

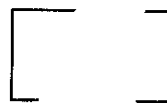
- (1) भाषा:- तुलसीदास जी ने अपने काव्य की रचना प्रमुख रूप से ब्राज व अवधी भाषा में की है, किंतु आपके काव्य की भाषा अर्ध अवधी है।

P.T.O.

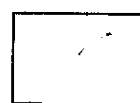
12



+



=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

कुल



(ब) शैली: - तुलसीदास जी ने अपने काल में प्रचलित सभी शैलियों का अपने काल्य में प्रयोग किया है।

(स) अलंकार: - आपके काल्य में उपमा, रूपक तथा उपप्रेक्षा अलंकारों का सहज विन्यास देखने को मिलता है।

(घ) छंद: - आपकी छंद योजना आद्वितीय है। आपने रामचरित मानस में दोहा छंदों तथा कवितावली में सर्वेया छंदों का मनोहारी वर्णन किया है।

साहित्य में स्थान: - तुलसीदास जी लोक कवि हैं, आपके काल्य में जीने की कला सीखी जा सकती है। आप हिन्दी पद्य साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवियों में सुविल्यात हैं।

प्रश्न क्रमांक (23) का 3.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

रचनाएँ: - (1) चिंतामणि।
त्रिवेदधि।
रस-मीमांसा।

भाषा: - शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत, परिमार्जित शुद्ध साहित्यिक रवदी बोली है। आपकी भाषा में सौष्ठव है। आपकी भाषा में व्यर्थ का शब्दाभार देखने को नहीं मिलता है, आपने व्यवस्थित तथा पूर्ण व्याकरणसम्मत भाषा का प्रयोग किया है, जिससे आपकी भाषा में कहीं भी शिथिलता देखने को नहीं मिलती है। भाषा की इसी कसबटके कारण अंग्रेजी समास शक्ति पायी जाती है। कहीं-कहीं तो भाषा सृष्टिमयी बन जाती है। जैसे- बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है।

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

४४ ५४ क अंक कुल अंक



काव्य सौंदर्य :-

- क) गुणों की महत्ता को दर्शाया गया है।
- ख) उदाहरणों द्वारा व्याख्यान का स्पष्टीकरण है।
- ग) अलंकारों का सुन्दर वर्णन है।

प्रश्न क्रमांक (२६) का उ.

(अ) :- पर्व :- भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग।

(ब) :- जीवन प्रवाह को सही दिशा देने वाले पर्व हैं।

(स) :- सारांश :- भारतीय संस्कृति में पर्व अत्याधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। पर्वों के बिना भारतीय संस्कृति अधूरी है। पर्व रिश्तों में मधुर रस डोलकर प्रेम व सद्भावना की भावना जगते हैं। पर्व ही हमें ऐसा भक्तियोग प्रदान करते हैं जब हम अपने जीवन के विषय में अच्छा सोच सकते हैं।

अथवा

प्रश्न क्रमांक (१५) का उ.

(अ) अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनना :- अपने मुँह से अपनी प्रशंसा कना।

वाक्य प्रयोग :- राम ने राजेश की थोड़ी सी प्रशंसा क्वया कर दी तब अपने मुँह मियाँ मिट्टू बनने लगे।

(ब) दाँत खट्टे करना :- पराजित करना।

वाक्य प्रयोग :- अर्जुन ने अकेले ही उत्तर गो प्रदेश के समय भविष्य विलामह, द्रोण व कर्ण के दाँत खट्टे कर दिये थे।

P.T.O.

18



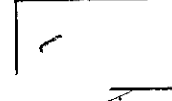
पृष्ठ

+



पृष्ठ 18 के अंक

=



अंक



प्रश्न क्र.

महाकालीन नारी : - महाकाल में नारी ब्रोगया हो गयी
वह केवल पुरुषों के रख रोग का

साधन बनकर रह गयी। कि मुस्लिम युग
में नारियों पर और भी बंधन लाए दिये गये क्योंकि
विदेशियों की दृष्टि किसी देश की धन सम्पदा के साथ
वहों की नारियों पर भी रहती थी। अतः नारियों को
बलत्कार, आदि से बचाने के लिए पर्दा प्रथा
का प्रचलन हुआ। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है -

पुत्रवला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी।
औंचल में हैं दुहा और औंचों में पानी ॥

B
S
E

आधुनिक नारी : - आधुनिक काल नारी के जागरण एवं
उद्वेग का काल रहा। बंगाल में राजा राममोहन
राय व उत्तर भारत में दयानंद सरस्वती ने
नारी स्वतंत्रता का बिगुल बजाया। आधुनिक युग
में युग-युग की दासता से पीड़ित नारी के प्रति
सहानुभूति अपनायी जाने लगी। सुभित्रानंदन
संत ने नारी स्वतंत्रता की मांग की है।

मुक्त करो नारी को मानव चित बोधिनी नारी को
युग-युग की निर्मम कृपा से जननी सखी ध्यारी को ॥

$$\boxed{\text{य. १ पृष्ठ}} + \boxed{\text{पृ. १ के अंक}} = \boxed{\text{उत्तर अंक}}$$



प्रश्न क्र.

प्राश्चात्य संस्कृति का प्रभाव :- प्राश्चात्य संस्कृति के शा में शकक भारतीय नारी तिलली लमक उड़ रही हैं वह अपने कर्तव्यों से विमुख हो गयी हैं। जिसके फलस्वरूप परिवारों का विध्वन हो रहा है। आज नारी अपने परिवारों से विमुख हो गयी हैं आज उसे आवश्यकता है कि वो परिवारों से विमुख न हो

उपसंहार - सभी पुराणों उपनिषदों में नारी की महिमा अक्षुण्ण है। वैदिक काल में शिव की कल्पना भी अर्द्ध-नारीश्वर रूप में हुई है। भारतीय ऋषि मनु ने कहा है जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं तथा जहाँ नारियों का अमादल होता है, वहाँ देवता एक क्षण भी नहीं ठहरते हैं।

पुत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते शमन्ते तत्र देवता ।

कृप्या पुष्प पलटे

पारी हो

20

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

याग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 28

(ब) काउ.

अनुशासन का महत्व

विस्तृत रूप से :-

- * प्रस्तावना
- * अनुशासन का शाब्दिक अर्थ।
- * छात्र और अनुशासन।
- * अनुशासन का दैनिक जीवन में लाभ।
- * अनुशासित शब्द :- विकसित शब्द।
- * उपसंहार।

B
S
E

